Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058,
https://www.srjis.com/issues_data/248
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, FEB-MAR 2025, VOL-13/68

कमकाजी महिलाओं और गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों पर प्रभाव

डॉ. नूतन कुमारी
शोधनिर्देशक, डॉ. महाचंद्र प्र. सिंह बी. एड. कॉलेज चन्द्रवारा, मुजफ्फरपुर
हरिशंकर यादव
शोधकर्ता, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (BRABU)

Paper Received On: 21 February 2025
Peer Reviewed On: 25 March 2025
Published On: 01 April 2025

परिचय

समाज में महिलाओं की भूमिका समय के साथ परिवर्तित हुई है। पहले महिलाएँ मुख्य रूप से परिवार और बच्चों की देखभाल में संलग्न रहती थीं, लेकिन औद्योगीकरण, शिक्षा और समानता की बढ़ती मांग के कारण महिलाएँ कार्यक्षेत्र में अधिक सक्रिय हो गई हैं। भारत में 1990 के दशक के बाद महिलाओं की कार्यक्षेत्र में भागीदारी में वृद्धि हुई, खासकर शहरी क्षेत्रों में। 2023 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर लगभग 32% थी, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह दर अपेक्षाकृत अधिक रही। यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम है।

जब महिलाएँ कामकाजी होती हैं, तो इसका प्रभाव उनके बच्चों की शिक्षा, मानसिक विकास और सामाजिक व्यवहार पर पड़ता है। इसी प्रकार, जो महिलाएँ घर पर रहती हैं, उनके बच्चों को पारिवारिक सहयोग अधिक मिलता है, जिससे उनका विकास अलग प्रकार से प्रभावित होता है। यह अध्ययन इस विषय पर गहन जानकारी प्रदान करता है।

कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों के विकास पर प्रभाव

1. शिक्षा पर प्रभाव

कामकाजी माताओं के बच्चे:

- आत्मनिर्भरता और स्वयं अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित होती है।
- समस्या-समाधान क्षमता अधिक विकसित होती है।
- माता-पिता के सीमित मार्गदर्शन के कारण कभी-कभी कठिन विषयों में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
- स्कूल और ट्यूशन पर अधिक निर्भरता रहती है।

Copyright@2025 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

गैर-कामकाजी माताओं के बच्चे:

- माता-पिता का सहयोग अधिक प्राप्त होता है, जिससे वे शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।
- अत्यधिक निर्भरता के कारण समस्या-समाधान की क्षमता सीमित हो सकती है।
- शिक्षण कार्य में परिवार के अन्य सदस्यों का योगदान अधिक रहता है।
- ट्यूशन और कोचिंग की आवश्यकता अपेक्षाकृत कम होती है।

2. मानसिक और भावनात्मक विकास

कामकाजी माताओं के बच्चे:

- आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास अधिक होता है।
- माता-पिता की अनुपस्थिति के कारण भावनात्मक असंतुलन हो सकता है।
- माता-पिता के साथ संवाद कम होने के कारण कुछ बच्चों में असुरक्षा की भावना हो सकती है।
- कठिन परिस्थितियों से निपटने की क्षमता अधिक विकसित होती है।

गैर-कामकाजी माताओं के बच्चे:

- माता-पिता का अधिक समय मिलने से भावनात्मक स्थिरता अधिक होती है।
- अत्यधिक संरक्षण के कारण जोखिम लेने की प्रवृत्ति कम हो सकती है।
- माता-पिता से अधिक संवाद होने के कारण मानसिक तनाव कम होता है।
- आत्मनिर्भरता की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम देखी जाती है।

3. सामाजिकता और अनुशासन पर प्रभाव

कामकाजी माताओं के बच्चे:

- सामूहिक कार्यों में भाग लेने की प्रवृत्ति अधिक होती है।
- निर्णय लेने और जिम्मेदारी उठाने में कुशल होते हैं।
- समाज में घुलने-मिलने और बाहरी दुनिया को समझने की क्षमता अधिक होती है।
- अनुशासन और समय प्रबंधन की बेहतर समझ विकसित होती है।

गैर-कामकाजी माताओं के बच्चे:

- परिवार और स्कूल में अनुशासन पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
- बाहरी दुनिया से कम जुड़ाव होने के कारण सामाजिकता की क्षमता अपेक्षाकृत कम हो सकती है।
- माता-पिता के अधिक संरक्षण के कारण निर्णय लेने की स्वतंत्रता कम हो सकती है।
- अनुशासन बनाए रखने में माता-पिता की भूमिका अधिक होती है।

भविष्य की संभावनाएँ

बदलते समय के साथ समाज में पारिवारिक संरचनाएँ और पालन-पोषण के तरीके भी विकसित हो रहे हैं। भविष्य में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ देखने को मिल सकती हैं:

- संकर (Hybrid) पालन-पोषण मॉडल: माता-पिता, विशेष रूप से महिलाएँ, लचीले कार्य घंटे और वर्क-फ्रॉम-होम विकल्पों को अपनाकर बच्चों को अधिक समय दे सकेंगी।
- तकनीक आधारित शिक्षा: ऑनलाइन शिक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से बच्चे अधिक आत्मनिर्भर बनेंगे और व्यक्तिगत मार्गदर्शन की आवश्यकता कम होगी।
- संतुलित अभिभावक दृष्टिकोण: माता-पिता बच्चों के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए पारंपरिक और आधुनिक तरीकों का मिश्रण अपनाएँगे।
- सामाजिक समर्थन प्रणाली: संयुक्त परिवारों की वापसी या सामुदायिक पालन-पोषण के मॉडल उभर सकते हैं, जहाँ बच्चों को अधिक सामाजिक समर्थन मिलेगा।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण

भारतीय संस्कृति में बच्चों के पालन-पोषण में आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चाहे माता-पिता कामकाजी हों या गृहिणी, यदि वे बच्चों को आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ते हैं, तो यह उनके मानसिक और भावनात्मक विकास में सहायक हो सकता है।

- आत्मनिर्भरता और संयम: भगवद गीता में कहा गया है कि आत्म-नियंत्रण और आत्मनिर्भरता मनुष्य को सशक्त बनाती हैं। यदि बच्चे अपने जीवन में इन मूल्यों को अपनाएँ, तो वे किसी भी स्थिति में सफल हो सकते हैं।
- संस्कार और नैतिकता: रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में पारिवारिक मूल्यों और नैतिकता का विशेष महत्व बताया गया है। बच्चों को इनसे जोड़ने पर वे सही और गलत का भेद समझ सकते हैं।
- मानसिक संतुलन: ध्यान (Meditation) और योग को अपनाने से बच्चों का मानसिक संतुलन बना रह सकता है, जिससे वे भावनात्मक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।
- कर्तव्य भावना: गीता के कर्मयोग सिद्धांत के अनुसार, कामकाजी माता-पिता अपने बच्चों को यह सिखा सकते हैं कि हर कार्य को पूरे मनोयोग से करना आवश्यक है, चाहे वह पढ़ाई हो या खेल-कूद।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण अंतर होते हैं। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि कोई एक स्थिति पूरी तरह से श्रेष्ठ या अवर है।

- कामकाजी माताएँ अपने बच्चों को आत्मनिर्भर और जुझारू बनने के अवसर देती हैं, जबकि गैर-कामकाजी माताएँ बच्चों को अधिक भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करती हैं।
- आध्यात्मिकता और नैतिक शिक्षा का समावेश बच्चों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- बदलते समय के साथ संतुलित पालन-पोषण के लिए माता-पिता को आधुनिकता और परंपराओं का समन्वय बनाए रखना आवश्यक है।

समाज में बदलते परिवेश के साथ यह आवश्यक है कि माता-पिता बच्चों के साथ उचित समय बिताएँ और उनके समग्र विकास पर ध्यान दें, चाहे वे कामकाजी हों या गैर-कामकाजी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची.....

डंडोना, अनु (2016). कामकाजी माताओं के बच्चों की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन, अपनिमाटी पत्रिका। प्राप्त स्रोत

अरोड़ा, रीता (2016). कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के किशोरों के व्यक्तित्व लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन, अपनिमाटी पत्रिका। प्राप्त स्रोत

स्वेता कुमारी एवं स्मिता कुमारी (2025). कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन, सोशल साइंस जर्नल्स। प्राप्त स्रोत

सिंह, रंजना एवं सिंह, सीताराम (2024). कार्यरत माता-पिता के बच्चों पर सामाजिकरण के प्रभावों का अध्ययन, आईजेएसएसएसआर जर्नल। प्राप्त स्रोत

अज्ञात लेखक (2023). कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, सोशियोलॉजी एंड ह्यूमैनिटीज। प्राप्त स्रोत